अन्नपूर्णा योजना
7 जन्मदिन | वैवाहिक वर्षगाँठ | पूर्वज-वार्षिकी
प्रकाशन तिथि : 09 नवम्बर, 2025
Posted at N.I. Estate P.O. N.D.-28
From 11-11-2025 to 15-11-2025
The Registrar of News Papers for India
R.N.I. DELHIN-2001-3044 Regd.
News Paper "Registered"
- DL(W) 10/2034/2023-25
- U(W)-37/2023-25
Licenced to post without prepayment

धर्मदूत

'धर्म एवं सामाजिक जागृति का अनुपम मासिक पत्र'

गीता जयंती
01 दिसम्बर, 2025 की
हार्दिक शुभकामनाएं

प्रतिष्ठा में,

प्रेषक : विश्व जागृति मिशन, ओंकारेश्वर महादेव मंदिर, 'जी' ब्लाक, मानसरोवर गार्डन, नई दिल्ली-110015

नवम्बर, 2025 | मार्गशीर्ष | सं. 2082 | अंक 292 | मूल्य एक प्रति 5.00 रु. | वार्षिक 50.00 रु. | पृष्ठ 8

1 अध्यात्म | 2 सम्पादकीय | 3 अम्बर की पाती | 4 समाचार दर्शन | 5 गुरु घर से पाती | 6 धर्मादा | 7 समाचार दर्शन | 8 समाचार दर्शन

मानव जीवन को संजीवनी देने वाला गीत है गीता

पुण्यमय भारत देश का महान् गौरव है श्रीमद्भगवद् गीता। मानवमात्र को जागृति प्रदान करनेवाला महान् ग्रंथ है गीता। कुरुक्षेत्र की युद्ध-भूमि में जगद्गुरु भगवान् श्रीकृष्ण के मुखारविंद से प्रकट हुआ यह अमृत-ज्ञान संसार में धर्म की स्थापना करता है। धर्म की शिक्षा, कर्त्तव्य-परायणता की दीक्षा, ज्ञान और कर्म में संतुलन का संदेश, कर्मों में कुशलता का उपदेश और भगवान् श्रीकृष्ण का वह प्यारा आदेश है गीता, जो सदा-सर्वदा शरणागत के लिए सुख, शांति, प्रेम-प्रसन्नता, वीरता, धीरता, उन्नति-प्रगति, सफलता, सार्वभौमिक व सर्वांगीण विकास की परम सिद्धि का साधन था, है और सदैव रहेगा।

लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व, कुरुक्षेत्र की युद्धभूमि में एक महान् गीत गूंजा। मानव-जीवन में संजीवनी का संचार करनेवाला वह गीत ही गीता है। गीता और गंगा भारत देश की पहचान हैं। सदियों से जैसे गंगा लोगों के तन, मन और जीवन को निर्मल करती रही है, वैसे ही कुरुक्षेत्र की युद्धभूमि में गायी गयी गीता के माध्यम से जन-कल्याण होता रहा है और होता रहेगा। महाभारत के भीष्मपर्व में बहुत ही सुंदर उल्लेख है-

गीता सुगीता कर्त्तव्याकिमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।

गीता को सुगीता बनाइए अर्थात् गीता का गान करें, गीता को पढ़ें, गीता का श्रवण करें, गीता का मनन करें, इसका निदिध्यासन करें क्योंकि समस्त शास्त्र इसीमें आ जाते हैं और यही मोक्ष का साधन है।

गीता गंगा च गायत्री गोविन्देति
हृदयस्थितिं पुनर्जन्म न विद्यते।

गीता, गंगा, गायत्री और गोविंद इस चतुर्गकार को जिसने हृदय में धारण कर लिया, उसे बार-बार जन्म लेकर इस दुनिया में भटकना नहीं पड़ेगा, उसकी मुक्ति सुनिश्चित है। स्कंद पुराण में गीता के पाठ की महिमा वर्णित है-

एतत् पुण्यं पापहरं धन्यं दुःख प्रणाशनम्।

अर्थात् गीता के पाठ से पुण्य की वृद्धि होती है, पाप नष्ट हो जाते हैं और वह धन्य हो जाता है जो इसका पाठ करता है। जरा विचार करके देखिए तो इसमें सारी ही चीज़ें आ गयीं, यदि दुःख-दारिद्र्य दूर करना हो तो गीता का पाठ कीजिए, यदि सुख-समृद्धि की कामना है तो पाठ कीजिए, अगर चाहते हैं कि समस्त तीर्थों का पुण्य मिल जाए तो पाठ कीजिए और हमारे पाप जो हमें कष्ट दे रहे हैं, यदि उनसे त्राण पाने की इच्छा हो तो गीता का पाठ कीजिए।

गीता का पाठ एवं चिंतन हमें कर्त्तव्य-बोध कराता है। जीवन के हर क्षेत्र में सम्यक् व्यवहार करना सिखाती है गीता, कायरता से वीरता की ओर प्रेरित करती है। कर्त्तव्य-पालन करते-करते न जाने कितनी बार मन निराशाओं से घिरेगा किंतु निराश मत होना, मन को फिर से तैयार करना क्योंकि तुम्हारा भाग्य बदलने के लिए कोई और नहीं आएगा, अपने भाग्य का निर्माण तुम्हें स्वयं करना होगा।

कर्त्तव्य के रथ से उतरकर भागने की इच्छा रखने वाले अर्जुन को ही नहीं बल्कि समस्त विश्व को गीता के माध्यम से भगवान् श्रीकृष्ण ने एक नयी संजीवनी दी "भागो नहीं, जागो, अपने स्वरूप को पहचानो।" पलायनवादी कहते हैं संसार से विमुख हो जाओ। संसार में क्या है, वन की ओर चलो, किंतु श्रीकृष्ण ने ऐसा कोई नारा नहीं दिया। उन्होंने कहा कि जीवन एक संघर्ष है, एक चुनौती है, परीक्षा-स्थल है, रणक्षेत्र है, इसका सामना करना होगा, परीक्षा देनी ही होगी। संघर्ष तब तक रहेगा, जब तक सांस चलेगी। संघर्ष से भागना नहीं, स्थिर होकर उसका सामना करना है।

गीता मरणधर्मा को अमृत का संदेश देती है और आलसी को कर्मठता का उपदेश गीता से मिलता है। भागने वाले को जागने का संदेश गीता से मिलता है, गिरे हुए को उठाने वाला हाथ गीता है। यह ग्रंथ केवल हाथ जोड़कर प्रणाम कर देने के लिए नहीं है। इस गीता-संगीत को गुनगुनाएं-होठों से नहीं, हृदय से, तब यह जीवन-संगीत बनेगा।

हम सभी मरणशील प्राणी हमेशा इस डर में रहते हैं कि हम मिट न जाएं, हम खो न जाएं, हमारा कुछ छिन न जाए, कोई हमारा कुछ ले न ले। हर समय डर में सहमे हुए हैं, चिंताओं में घिरे हुए हैं, निराशा हमें खोखला कर रही है। भगवान् कृष्ण समझाते हैं कि तुम्हारा कोई कुछ छीन नहीं

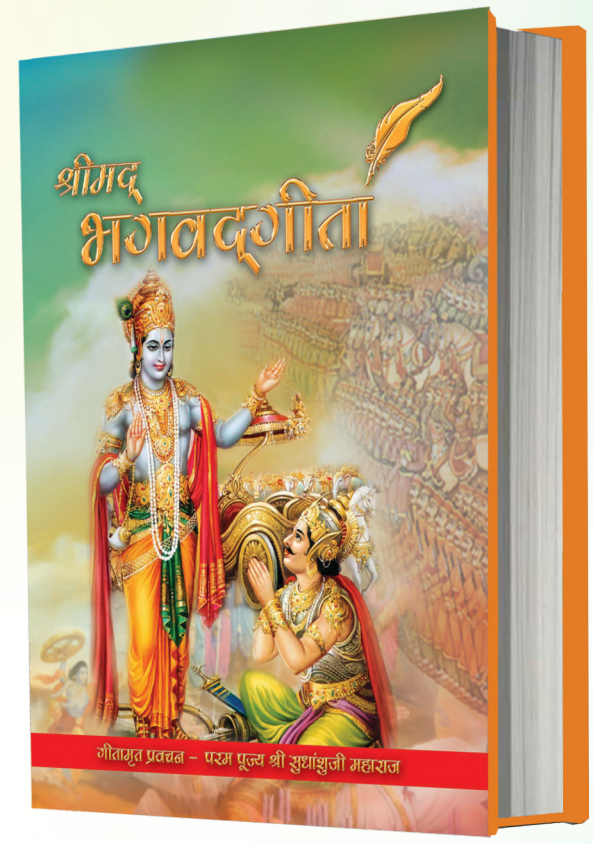

लेगा। तुम अपने स्वरूप को पहचानो, तुम चैतन्य आत्मा हो, जो नित्य है, शाश्वत है। यह शरीर अनित्य है। जो मिटनेवाली नश्वर वस्तुएं हैं उनकी चिंता क्यों करते हो, आएंगी, जाएंगी, मिलेंगी, बिछड़ेंगी- संसार है ही संयोग और वियोग का सम्मेलन। जो मिलकर बिछड़े नहीं, जिसे पाकर हम खो न दें, जो सदा हमारे पास रहेगा वह तत्त्व, परम तत्त्व है - परब्रह्म परमेश्वर - वहां से अपने को जोड़ने की कोशिश करो। नश्वर पदार्थों के साथ अपने को जोड़ोगे तो रोज़ ही दुःखी होंगे, क्योंकि ये कभी मिलेंगे और कभी बिछड़ेंगे। जो मिलकर कभी बिछड़ता नहीं वह परमात्मा है और आत्मा का परमात्मा से ही मेल कराती है गीता। ●

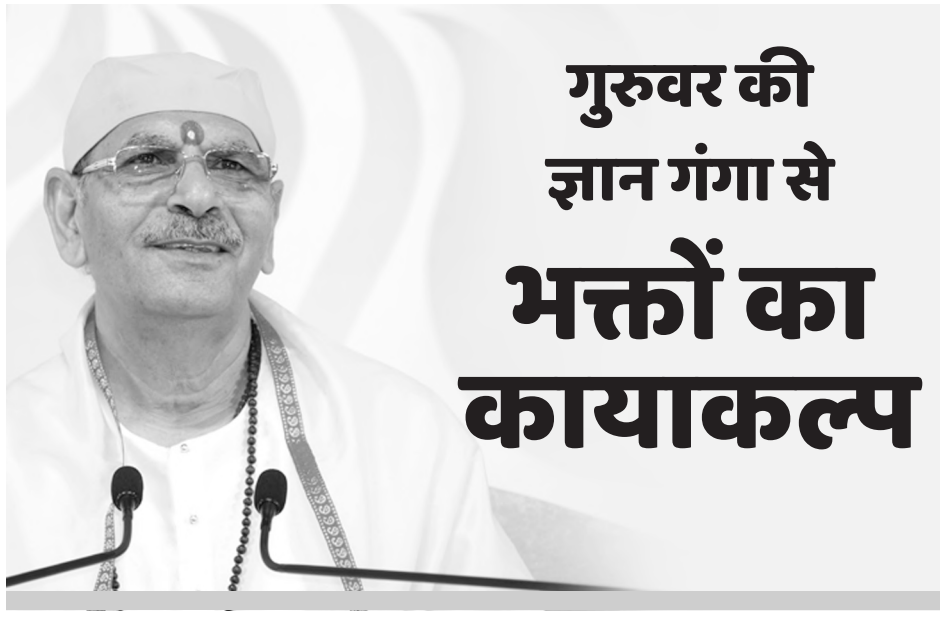

गुरुवर की ज्ञान गंगा से भक्तों का कायाकल्प

वर्तमान समय में मनुष्य अपने सुख और खुशी की तलाश में अपने आप से इतना दूर हो गया कि उसे खुद का ध्यान ही नहीं है कि मैं कौन हूं, कहां से आया हूं, क्या कर कर रहा हूं? ऐसे भ्रमित लोगों को पूज्य सद्गुरु श्री सुधांशु जी महाराज ने अपने पवित्र ज्ञान और ध्यान से स्वयं से पहचान कराई है। आपने परमात्मा से जन्म-जन्मांतरों से बिछड़ी आत्माओं को ज्ञान, भक्ति और सेवा-सत्संग की संजीवनी पिलाकर उनके जीवन का कायाकल्प कर दिया है। वेद, उपनिषद, गीता, रामायण, भारतीय मनीषियों, दार्शनिकों, संतों, फकीरों के सद्ज्ञान को वर्तमान वैज्ञानिक युग की आवश्यकताओं के अनुकूल परिभाषित करके अपनी सरल, सहज, मनमोहिनी वाणी में गुरुवर ने लोगों के दिलों में उतारा है।

आपने अपने सारगर्भित प्रवचनों को बौद्धिक मनोरंजन का साधन नहीं माना, अपितु इन्हें आत्मिक शुद्धि और परोपकारी आचरण का साधन स्वीकार किया है। आप अपने सत्संगों में धार्मिक ज्ञान बांटने के साथ-साथ अनेक राष्ट्रीय एवं सामाजिक प्रश्नों को उठाकर उनका समाधान सुझाया है। बच्चों और युवाओं में सनातन संस्कृति और संस्कारों के प्रति प्रेम जागृत करने के उद्देश्य से आपने समाज में वरिष्ठ नागरिकों, परिवारों में वृद्धजनों के सेवा सम्मान में श्रद्धापर्व अभियान, बालसंस्कार अभियान, नारी अभ्युदय अभियान, आनंदमय जीवन संघ व सनातन संस्कृति जागरण अभियान चलाये। मातृ-पितृ भक्ति, गुरु भक्ति, राष्ट्रभक्ति और ईश्वर भक्ति को आप श्रेष्ठ मानते हैं। आप नगर, महानगर, देश-विदेश में जहां भी विराजमान हुए हैं वहीं स्वत: एक तीर्थ निर्मित हो गया और आपकी अमृत ज्ञान धारा की गंगा का पान कर उसे अंत:करण में उतारकर करोड़ों भक्तों ने अपने जीवन का कायाकल्प कर लिया। आप एक ओर जहां मानव चेतना को नई दिशा दे रहे हैं वहीं दूसरी ओर सनातन संस्कृति में अंतर्निहित जीवन मूल्यों, मानवीय सम्बन्धों, आदर्श मर्यादाओं एवं उज्जवल परम्पराओं को भारतीय समाज में पुन: स्थापित कर राष्ट्र को विश्व गुरु के गौरव से आलोकित करने में तत्पर हैं।

-डॉ. नरेन्द्र मदान

अपनायें संस्कृति संस्कार - पायें गुरुवर का प्यार

- संस्कारों से भरा परिवार, विश्व जागृति मिशन का आधार।
- सेवा दान से करें जो प्यार, गुरु आशीष के वे हकदार।
- आओ संस्कार अपनायें, घर-परिवार को स्वर्ग बनायें।
- गुरुवर करते उससे प्यार, संस्कार मय जो परिवार।
- गुरुवर से गुरुमंत्र जगाना, मानव में देवत्व है लाना।

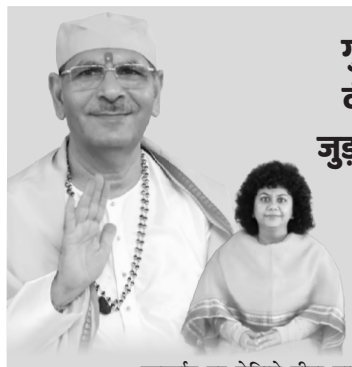

गुरुदेव श्री सुधांशु जी महाराज एवं डॉ. अर्चिका दीदी के विचार सुनने व विश्व जागृति मिशन से जुड़ने और दूसरों को जोड़ने के लिए सोशल मीडिया के निम्नलिखित प्लेटफार्म पर सम्पर्क करें-

TO CONTACT US : LOG-IN

VISHWA JAGRITI MISSION
Facebook Youtube Instagram X Linked In Whatsapp

HIS HOLINESS SUDHANSHU JI MAHARAJ
Facebook Youtube Instagram X Koo Linked In Speaking Tree

DR. ARCHIKA DIDI JI
Facebook Youtube Instagram X Koo Linked In Speaking Tree

दूरदर्शन पर देखिये गीता ज्ञान अमृतम्
DD NATIONAL
प्रतिदिन प्रात: 7:00 से
Tata Sky - 197
Airtel - 153
Dish TV - 113
Tata Play - 114 in SD
Jio TV, Watcho and Waves OTT

संस्कार
सोमवार से शुक्रवार
प्रतिदिन प्रात: 7:45 से 8:05 तक

Phone +91 99999 04747
www.sudhanshujimaharaj.net
www.vishwajagritimission.org
www.drarchikadidi.com
info@sudhanshujimaharaj.net
info@vishwajagritimission.org

Jaago with Sudhanshu ji Maharaj

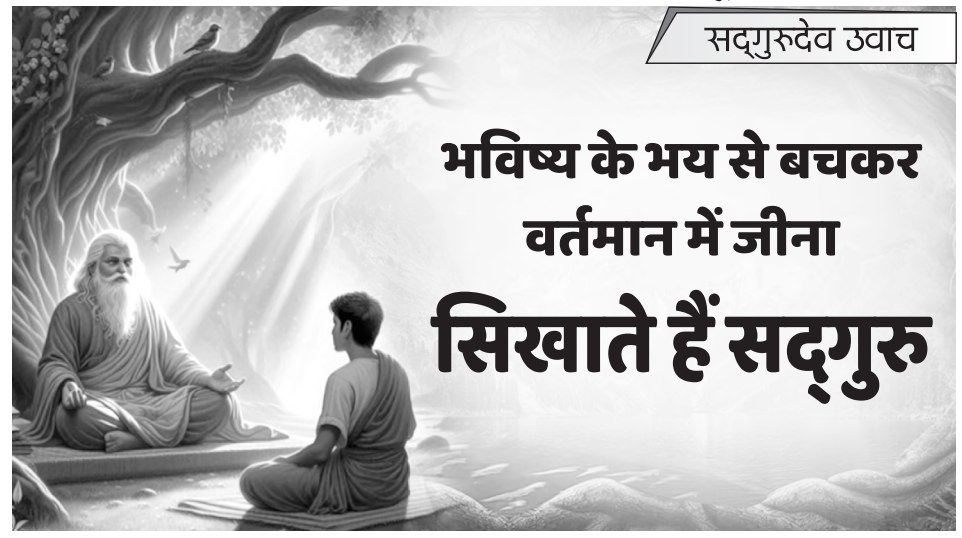

सद्गुरुदेव उवाच

भविष्य के भय से बचकर वर्तमान में जीना सिखाते हैं सद्गुरु

कोई भी ऐसा तरीका अपनी जिंदगी में अपनाओ कि जिससे किसी का भला होता रहे और हम किसी के सामने दाता भी न दिखाई दें। अपने अहंकार का प्रदर्शन नहीं करना चाहिए। सहयोग के लिए हमेशा तत्पर रहो। परमात्मा ने जो दिया उसमें सब्र करना सीखो। भगवान से मांगों कि अपनी कमायी का फल खाऊं और आगे बढ़ने के लिए पुरुषार्थ करो। भाग्य के भरोसे नहीं बैठो। भाग्यवादी बन कर नहीं जीना।

भगवान पर भरोसा करना और अपने कर्म का भरोसा करना। अपने पुण्यों पर भरोसा करना। अपने भगवान पर भरोसा रखो, पुरुषार्थ करो। अपने हाथों से जितना अच्छा हो सकता है करो। धर्म के नाम से इंसान को डराना नहीं है। धर्म तो व्यक्ति के अंदर से डर निकालता है और सद्गुरु का भी काम यह है कि अंदर के सारे डर निकल दे और सही राह की तरफ चलना सिखा दे।

जो डराता है वह 'गुरु' नहीं है। गुरु तो वह है जो अंदर से सारे डर निकल दे। इसलिए सब्र करो, पुरुषार्थ करो। भाग्य ने जो कुछ दिया हो उसको मजबूरी न मानो। अपने वर्तमान में रहना सीखो। वर्तमान में रहोगे तो प्रसन्नता आएगी। भविष्य का भय, वर्तमान की चिन्ता बनता है। भविष्य में अनहोनी से डर रहे हैं। चिन्ता भविष्य का भय है, और जो आदमी भविष्य के भय को परमात्मा के ऊपर छोड़ दे और यह कह दे, जिसने आज तक निभाया है आगे भी निभायेगा। जिसने आज तक दिया है आगे भी देगा। वह निश्चिन्त होकर जीयेगा। अपने वर्तमान में जीओ तो प्रसन्नता आएगी। ●

पूज्य श्री सुधांशु जी महाराज के पावन सानिध्य में आयोजित भक्ति सत्संग के आगामी कार्यक्रम, 2025

12 से 16 नवम्बर	-	श्रीकृष्ण ध्यान-योग, वृन्दावन, उत्तर प्रदेश
27 से 30 नवम्बर	-	विराट भक्ति सत्संग, बरनाला, पंजाब
01 दिसम्बर	-	गीता जयंती, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
04 दिसम्बर	-	पूर्णिमा सत्संग, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
04 से 07 दिसम्बर	-	रायपुर, छत्तीसगढ़
04 दिसम्बर	-	पूर्णिमा दर्शन, रायपुर, छत्तीसगढ़ (महाराजश्री के सान्निध्य में)
18 से 20 दिसम्बर	-	कोलकाता, पश्चिम बंगाल
25 से 28 दिसम्बर	-	सूरत, गुजरात
01 जनवरी	-	नववर्ष महोत्सव, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
03 जनवरी	-	पूर्णिमा दर्शन, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
07 से 11 जनवरी	-	नागपुर, महाराष्ट्र
16 से 19 जनवरी	-	उल्हास नगर, महाराष्ट्र
20 से 26 जनवरी	-	वरदान लोक आश्रम, थाणे, मुम्बई, महाराष्ट्र
23 जनवरी	-	बसंत पंचमी, वरदान लोक आश्रम, थाणे, मुम्बई, महाराष्ट्र
26 जनवरी	-	गणतंत्र दिवस, वरदान लोक आश्रम, थाणे, मुम्बई, महाराष्ट्र
01 फरवरी	-	पूर्णिमा दर्शन, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
12 फरवरी	-	सरसोली धाम, कुडाल (महाराष्ट्र)
14 से 15 फरवरी	-	महाशिवरात्रि, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
04 मार्च	-	होली मंगल मिलन एवं पूर्णिमा दर्शन आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
12 से 15 मार्च	-	सनातन संस्कृति जागरण अभियान, मेरठ, उत्तर प्रदेश
26 मार्च	-	राम नवमी एवं मिशन स्थापना दिवस आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली

आयोजक : विश्व जागृति मिशन

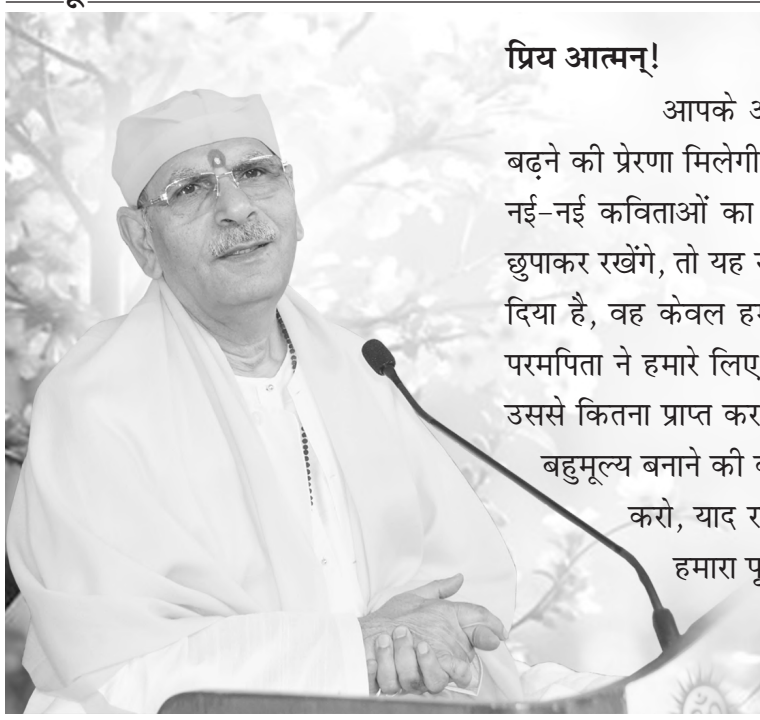

प्रिय आत्मन्!

आपके अंदर जो भी प्रतिभा है, जब आप उसको दुनिया को देंगे, तब बदले में प्रशंसा, प्रोत्साहन मिलेगा। आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलेगी, जैसे एक बढ़ई लकड़ी के द्वारा अपनी कलाकृतियों को नयी-नयी आकृतियां प्रदान करता है, एक कवि नई-नई कविताओं का सृजन करता है, एक संगीतज्ञ नयी-नयी धुनें तैयार करता है, यदि हम इन चीजों को अपने ही अंदर छुपाकर रखेंगे, तो यह सब व्यर्थ हैं, जब हम इनको दुनिया को देंगे, तब इनकी कीमत बढ़ेगी। क्योंकि प्रभु ने जो कुछ भी हमको दिया है, वह केवल हमारा नहीं है। हमें वह दूसरों को देना चाहिए। प्रभु ने हम सबको अपने हाथों से निर्मित किया है, उस परमपिता ने हमारे लिए तमाम सारे सुखों और स्वर्ग जैसे आनंद की नदियां बहा दी हैं। यह हमारे ऊपर निर्भर करता है कि हम उससे कितना प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए अपने आपको उपयोगी बनाओ, कीमती बनाओ, खुद को निरा पत्थर नहीं, हीरे जैसा बहुमूल्य बनाने की कोशिश करो, अपनी क्षमता बढ़ाओ अपना चहुमुखी विकास करो, जीवन के एक-एक क्षण का सदुपयोग करो, याद रखो यह मानव जीवन अनमोल है, यह हमको बड़े जतन एवं त्याग से मिला है, इसको सार्थक करो कि हमारा पृथ्वी पर जन्म लेना सफल हो जाए। जीवन को इस प्रकार जियो कि दूसरों के लिए प्रेरणा बन जाएं।

बहुत-बहुत आशीर्वाद, शुभ मंगल कामनाएं।

-आचार्य सुधांशु

धर्मकोष सदस्यता अभियान

एक बार दान, अनंतकाल तक पुण्य का वरदान

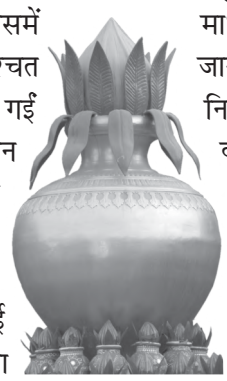

धर्मकोष एक ऐसा कोष है जिसमें दानदाता एक बार में एक निश्चित धनराशि संस्था द्वारा चलाई गई विभिन्न सेवाओं के लिये दान करेगा, वह राशि दानदाता अपनी सुविधानुसार चार किश्तों में भी दे सकता है। दानदाता से प्राप्त सहयोग राशि को बैंक में स्थाई रूप से जमा कर दिया जायेगा और उस राशि से प्राप्त ब्याज या अन्य माध्यमों से प्राप्त आय द्वारा विश्व जागृति मिशन की विभिन्न सेवाएं निरन्तर संचालित रहेंगी। धर्मकोष में दी गई यह धन राशि ठीक वैसे ही है जैसे एक बार आम का पेड़ लगाओ और जिन्दगी भर उसके फल खाओ। अर्थात् धर्मकोष में एक बार दान दो और उस दान की अर्जित राशि से वर्षों-वर्षों तक दान देने का पुण्य लाभ पाओ।

धर्मकोष दानदाताओं के लिए आनन्दधाम में होता है

नित्य यज्ञ, पूजा, प्रार्थना एवं आरती

मिशन द्वारा संचालित सेवाकार्यों और भक्तों के अनन्तकाल तक पुण्य प्राप्ति के लिए एक "**धर्मकोष**" बनाया गया है। इस धर्मकोष में दान देने वाले भक्त के नाम के साथ उसकी वंशावली का नाम एक कालपात्र में स्वर्णाक्षरों में अंकित कर उसे द्वादश ज्योतिर्लिंग प्रांगण में स्थापित किया गया, जो कि सैकड़ों वर्षों तक सुरक्षित रहेगा और दानदाता के आनेवाली पीढ़ियां अपने पूर्वजों पर गर्व करेंगी। धर्मकोष के दान-दाताओं की वंशावली शिव वरदान तीर्थ में स्थापित हैं, जहां पर नित्य सायंकालीन यज्ञ, आरती में गुरुकुल के ऋषिकुमारों द्वारा धर्मकोष के दानदाताओं के लिए यज्ञ में आहुतियां दी जाती हैं तथा उनके लिए प्रार्थना व मंगलकामना भी की जाती है।।

धर्मकोष में आप यह सहयोग सीधे बैंक एकाउण्ट में भी जमा कर सकते हैं। जमा करने के उपरान्त श्री ललित कुमार जी को फोन नम्बर - 9312284390 पर अवश्य सूचित करें ताकि दिये गये दान की रसीद आपको भेज सकें।

Name of Account : VISHWA JAGRITI MISSION
Account number : 235401001600
IFSC : ICIC0002354
Name of Bank : ICICI Bank
Address of Branch : Shop Number 3, Nazafgarh Road,
Nangloi, New Delhi - 110041

शिव वरदान तीर्थ

वह स्थान जहां पूर्ण होती हैं मनोकामनाएं

विश्व विख्यात संतों ने किया यहां दर्शन-पूजन

ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग

इस अंक में हम बात कर रहे हैं आनन्दधाम आश्रम स्थित शिव वरदान तीर्थ में चतुर्थ ज्योतिर्लिंग ओंकारेश्वर की। जहाँ-जहाँ शिव ज्योतिरूप में प्रगटे वे स्थान भारत भर में ज्योतिर्लिंग कहलाये, उनकी मान्यता जगत प्रसिद्ध है, उन्ही का साक्षात्स्वरूप आनन्दधाम ओंकार पर्वत की गुफा में 12 ज्योतिर्लिंगों में विद्यमान हैं। यहाँ शिव की दिव्य उर्जा कष्ट हरण करती है। इन ज्योतिर्लिंगों के दर्शन पूजन और रुद्राभिषेक से हजारों भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण हुई हैं। देश विदेश के भक्त यहाँ मनौती पूर्ण करने आते हैं। भारत के महान संतों ने भी यहाँ आकर दर्शन पूजन किया है और कृपा प्राप्त कर आनन्दित हुए हैं। पूज्य जगद्गुरु स्वामी राजराजेश्वराश्रम जी महाराज (हरिद्वार), विश्व प्रसिद्ध राम कथा वाचक पूज्य मोरारी बापू जी, चमत्कारी विद्या के धनी सनातन गौरव बागेश्वर सरकार पूज्य पंडित धीरेन्द्र शास्त्री जी तथा भारत भर के सैकड़ों साधु सन्यासी एवं भक्तजन यहाँ की दिव्य ऊर्जा से लाभान्वित हुए।

शिव वरदान तीर्थ के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक विशेष ज्योतिर्लिंग है 'ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग'। जिनके दर्शन और पूजन करने से सभी प्रकार के पापों का नाश होता है और जीवन में सुख-शांति तथा समृद्धि की प्राप्ति होती है। जो भक्त श्रद्धाभाव से इस ज्योतिर्लिंग का अभिषेक करता है, उसकी अधूरी इच्छायें पूरी होती हैं और जीवन में शुभ फल की प्राप्ति होती है। यह स्थान पति-पत्नी के सम्बन्धों में सामंजस्य, परिवार में सुख-शांति तथा आर्थिक स्थिरता प्रदान करता है। आध्यात्मिक दृष्टि से ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग यह संदेश देता है कि जीवन केवल भोग या दु:ख का मिश्रण नहीं है, अपितु यह आत्मा की यात्रा है, जिसका अंतिम लक्ष्य भगवान शिव में लय होना है। जब व्यक्ति ओंकारेश्वर की शरण में आ जाता है तो उसके अंदर की नकारात्मकता दूर होकर उसे धर्म, संयम, आत्मशक्ति, ईश्वर भक्ति और मोक्ष का मार्ग मिल जाता है। दु:ख-दुर्भाग्य से मुक्ति और सुख-सौभाग्य प्राप्ति के लिए शिव वरदान तीर्थ स्थित ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन-पूजन अवश्य करें।

दाता को मिलता है सुख-सुकून और मन की शांति

अगर इंसान के अंदर दया जाग जाये तो इस संसार में कहीं भी पीड़ित इंसान नहीं होगा। व्यक्ति सोचेगा कि मेरे घर से कुछ न कुछ उस भाई के लिये हिस्सा जाना चाहिए जहां कोई तड़प रहा है या अभावग्रस्त है। अपने परमात्मा को मनाने का इससे बढ़िया तरीका और कोई नहीं हो सकता। आपके घर में जब कभी विवाह, शादी का मौका हो। अपने बेटे या बेटी की शादी में आप लाखों रुपये खर्च करते हों। उस समय किसी गरीब का ख्याल कर लेना, किसी विधवा महिला की परेशानी को याद कर लेना कि कोई विधवा महिला अपनी जवान बेटी की शादी करने के लिये बेचैन बैठी होगी। आप किसी विधवा, बेसहारा महिला की मदद करने के लिए पांच दस हजार रुपये निकालकर अलग रख लेना। आपकी ऐसी सहायता से निश्चय ही आपके ऊपर परमात्मा की भारी कृपा रहेगी। आपके बेटा-बेटी आबाद रहेंगे, उन्हें कभी कोई कमी आने वाली नहीं है। अपना मकान बनाने लगो तो लाखों रुपये उसमें खर्च होते हैं। यह सोच लेना मंहगाई बढ़ गई थोड़े ज्यादा पैसे खर्च हो गये, 10, 20 या 50 हजार निकाल करके रखो। कोई बरबाद इंसान जिसका मकान न रहा हो, उसे संभालने के लिए आप अपनी तरफ से मदद कर देते हैं, या किसी का मकान बनवा देते हैं, तो निश्चित बात है कि जिस मकान में आप रहोगे उसमें परमात्मा की कृपा की शीतल छाया हमेशा बनी रहेगी।

अपने बच्चों को आप जिस समय सर्दियों के कपड़े बनवाकर देते हो तो उस समय किसी गरीब के बच्चे का ख्याल कर लेना, एक स्वेटर आप किसी गरीब बच्चे के लिए खरीद कर ले जाना और यह सोच करके कि अपने भगवान, दरिद्रनारायण हैं उसे पहना देना यह तरीका अपना करके देखिए। यह सब सेवा का सबसे बढ़िया तरीका है। अपने बच्चों के लिए आप कापी किताबें अन्य सामान खरीदते हैं, किसी गरीब बच्चे को पढ़ाने की जिम्मेदारी ले लेना अपने ऊपर। जो बच्चा पढ़ना चाहता है, लेकिन उसका कोई सहारा नहीं। एक बच्चे को पढ़ाने की जिम्मेदारी ले लीजिए, एक बच्चे की जिम्मेदारी, थोड़ा समय और थोड़ा सा धन बहुत बड़ी सेवा बन जायेगी। ●

आनंदधाम आश्रम में सम्पन्न हुआ श्री गणेश लक्ष्मी महायज्ञ

यज्ञ सनातन संस्कृति की सबसे प्राचीन पूजा-पद्धति -सुधांशु जी महाराज

मनोकामना पूर्ति हेतु देश-विदेश के यजमान भक्तों ने दी यज्ञ में आहुतियां

आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली। 04 से 07 अक्टूबर, 2025, पूज्य सदगुरुदेव श्री सुधांशु जी महाराज एवं डॉ. अर्चिका दीदी के पावन सान्निध्य एवं मार्गदर्शन में आनन्दधाम तीर्थभूमि में संचालित चार दिवसीय ''108 कुण्डीय श्री गणेश-लक्ष्मी महायज्ञ'' हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। यज्ञीय ऊर्जा से भरे परिसर के आध्यात्मिक वातावरण में देश विदेश से पधारे हजारों मिशन भक्तों ने यज्ञ आहुतियों के साथ जीवन व परिवार में सुख-समृद्धि एवं शुभ मनोकामना पूर्ति के लिए प्रार्थनायें कीं और गुरुसंकल्पित इस महायज्ञ में यज्ञाहुतियां देकर अपने सौभाग्य को सराहा। इस वार्षिक 108 कुण्डीय श्री गणेश-लक्ष्मी महायज्ञ आयोजन का यह 25वां वर्ष था। इस अवसर पर सैकड़ों संकल्पित भक्तों ने पूज्य गुरुदेव-डॉ. अर्चिका दीदी से वरदान सिद्धि साधना के रहस्य सीखे। एक भी भक्त इस धार्मिक अनुष्ठान से छूट न जाये, इस निमित्त पूज्य गुरुदेव ने आश्रम पधारने वाले प्रत्येक इच्छुक भक्त के लिए यज्ञ आहुतियों की व्यवस्था बनाई थी। जो भक्त प्रत्यक्ष रूप से नहीं आ पाये थे, उनके लिए ऑनलाइन यज्ञीय व्यवस्था की गयी थी। इस निमित्त हर आनलाइन भक्त के लिए प्रतिनिधि यजमान बनाकर महायज्ञ का लाभ प्रदान किया गया। पूज्य गुरुदेव व डॉ. दीदी एवं पूज्या गुरुमाता के आशीर्वाद से भक्तों को नियमित श्री गणेश-लक्ष्मी का पूजन करने एवं महायज्ञ में आहुतियां समर्पित करने का सौभाग्य मिला। साथ ही शिव वरदान तीर्थ सहित सम्पूर्ण आनन्दधाम गुरुतीर्थ में भक्तों द्वारा भ्रमण, प्रकल्पों का दर्शन एवं तीर्थ परिक्रमा करते हुए यज्ञशाला दर्शन की अनुभूतियाँ ऊर्जा जाग्रत करने वाली रहीं।

इस यज्ञीय आयोजन के दौरान प्रसार भारती के अध्यक्ष श्री नवनीत सहगल, निषाद पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं उत्तर प्रदेश सरकार के कैबिनेट मंत्री डॉ संजय कुमार निषाद, एनडीए एवं शिवसेना सिंदे

के राष्ट्रीय समन्वयक श्री अभिषेक वर्मा सहित बड़ी संख्या में गणमान्य आयोजन स्थल पहुंचे। पूज्य महाराजश्री का आशीर्वाद एवं महायज्ञ में आहुतियों का सौभाग्य प्राप्त किया।

श्रीगणेश-लक्ष्मी महायज्ञ के दौरान भगवान इंद्र देव की कृपा बरसात के रूप में देखने को अवश्य मिली, पर भावनाशील भक्तों के आगे भगवान को भी झुकना पड़ता है, जैसी कहावत गुरुधाम के इस महायज्ञ उत्सव में भी देखने को मिली। रात में बारिश होती रही और दिन में यज्ञ भगवान को आहुतियां समर्पित होती रहीं, जो चमत्कार जैसा था। पूज्य गुरुदेव एवं डॉ. अर्चिका दीदी जी एवं गुरु माता के सान्निध्य में हजारों लोगों सहित पूर्णिमा की पूर्णाहुति पर सम्पूर्ण आश्रम परिसर श्रद्धालुओं से भरा था। गुरुदेव ने सपरिवार विशेष आकृतियों में तैयार क्रमशः 9 की संख्या वाले यज्ञ कुण्ड की मुख्य यज्ञवेदी पर विराजमान होकर पूर्णाहुति की और यजमानों को अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

आनन्दधाम के विद्वान आचार्यों ने ऋषियों एवं तीर्थ सत्ता की सूक्ष्म उपस्थिति तथा गुरुसत्ता के मार्गदर्शन में शास्त्रीय विधि विधान से सम्पूर्ण महायज्ञ का संचालन किया। अंतिम दिवस कार्तिक पूर्णिमा जैसे पवित्रतम अवसर पर गुरुभक्तों एवं शिष्यों को अपने सदगुरुदेव महाराज के दर्शन और महाआरती का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

नित्य प्रातःकाल पूज्य महाराजश्री, गुरुमाता व डॉ. दीदी के साथ यजमान भक्तगण माँ लक्ष्मी-गणेश का पूजन सम्पन्न करते, तत्पश्चात महायज्ञ का शुभारम्भ होता। महायज्ञ के अवसर पर भक्तों को आशीर्वाद देते हुए पूज्य महाराजश्री ने कहा-यज्ञ सनातन संस्कृति की सबसे प्राचीन पूजा- पद्धति है। यज्ञ की अग्नि सभी देवताओं का मुख है। यज्ञ में दी हुई आहूतियां मंत्रों के माध्यम से सीधे देवताओं के पास पहुंचती हैं और देवता हमें सुख-शांति-समृद्धि का वरदान देते हैं दुःख में परेशानी में यज्ञ का फल सुख समृद्धि बनकर सामने आता है। इसलिए हर व्यक्ति को यज्ञ अवश्य करना चाहिए।

इस प्रकार सम्पूर्ण आश्रम परिसर चार दिनों तक दैवीय अनुभूति का केन्द्र बना रहा। महायज्ञ में यजमानों ने माँ लक्ष्मी एवं गणेश भगवान का विधिवत वैदिक एवं शास्त्रीय परम्परा से पूजन किया। पूज्यवर ने भक्तों से भी ध्यान-पूजन-अभिषेक सम्पन्न कराया। इस साधना के लिए साधक अपनी श्री गणेश-लक्ष्मी की मूर्तियां साथ लेकर आये थे। जिन्हें महायज्ञ के दिव्य वातावरण में गुरुदेव ने ऊर्जित किया। साथ ही मिशन की ओर से यजमान भक्तों को यज्ञ के विशेष प्रसाद सहित पूज्य सद्गुरुदेव के संरक्षण में विशेष पूजित सिद्ध किये हुए 'श्रीयंत्र' भेंट किये गये।

इस प्रकार पूज्य गुरुवर श्री सुधांशु जी महाराज ने भक्तों के जीवन और घर-परिवार को विघ्न-बाधाओं से मुक्त रखने, माँ लक्ष्मी की कृपा से भरपूर करने एवं दैवीय कृपा से जोड़े रखने हेतु प्रार्थनाओं के साथ यज्ञ पूर्ण कराया। कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु मिशन के महामंत्री श्री देवराज कटारीया जी के नेतृत्व में आश्रम के अधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं एवं सेवादारों ने अपनी भावपूर्ण भूमिका निभाई। ●

करुणासिंधु अस्पताल, आनंदधाम आश्रम कार्यालय एवं ओंकारेश्वर महादेव मंदिर में सम्पन्न हुआ दिवाली पूजन

पूज्य सद्गुरुदेव जी महाराज तथा अध्यात्म एवं ध्यान गुरु डॉ. अर्चिका दीदी जी के गरिमामय सान्निध्य में प्रत्येक वर्ष की भांति 16 अक्टूबर, 2025 को अस्पताल में वैदिक विधि से यज्ञ सहित दिवाली पूजन हुआ। गुरुदेव जी ने सब को दीपावली की बधाई देते हुए कहा 'जब वर्ष 1997 में आनंदधाम आश्रम का निर्माण हुआ तो हमने 1999 में ही इस अस्पताल की इस क्षेत्र में स्थापना की क्योंकि आस पास के दस ग्रामों में कोई चिकित्सा सुविधा नहीं थी। अब तक यहां 2067256 गरीब मरीजों का उपचार एवं 40131 मोतियाबिंद के आप्रेशन हो चुके हैं। हम यहां सेवा करते हैं, व्यापार नहीं। सभी डॉक्टर योग्य और अनुभवी हैं। पूर्ण आहुति के साथ पूजन सम्पन्न हुआ। इस पूजन में श्री देवराज कटारीया, डॉ. नरेन्द्र मदान, डॉ. नीरज शर्मा, डॉ. संजय थम्मन, श्री राजकुमार अरोड़ा तथा अनेक अन्य डॉक्टर, अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थे। मुख्य यजमान उद्योगपति श्री नरेश अग्रवाल थे। यज्ञ सम्पन्न होने के उपरांत अस्पताल की डायरेक्टर डॉ. दीदी जी ने सबको दीपावली के उपहार दिए।

20 अक्टूबर, 2025 को विश्व जागृति मिशन के मुख्य कार्यालय आनंदधाम आश्रम, नई दिल्ली में पूज्य गुरुदेव एवं डॉ. अर्चिका दीदी ने विधिवत श्री गणेश-लक्ष्मी जी का अभिषेक अर्चन कर दीवाली पूजन किया। इस अवसर पर आश्रम के अधिकारी, सेवादार, कर्मचारी और आश्रमवासी उपस्थित रहे। सभी ने पूजन एवं आरती में सम्मिलत होकर स्वयं के सौभाग्य को जागृत किया। पूजन आरती के उपरांत सभी को प्रसाद और गुरुवर एवं डॉ. दीदी के करकमलों से दिवाली का उपहार भेंट किया गया।

दिवाली पूजन की इसी श्रृंखला में 21 अक्टूबर, 2025 को पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में ओंकारेश्वर महादेव मंदिर में दिवाली पूजन एवं आशीर्वचन का कार्यक्रम रखा गया, जहां मां लक्ष्मी की कृपा और गुरुदेव का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए भक्तों का सैलाब उमड़ पड़ा। 22 अक्टूबर को आनन्दधाम गौशाला में गोवर्धन पूजा का भी भव्य आयोजन किया गया। ●

भगवान श्री राम की धर्म निष्ठा के आदर्श प्रतीक हैं हमारे गुरुवर

परहित सरिस धर्म नहीं भाई। परपीड़ा सम नहिं अधमाई।। (रामचरित मानस)

दूसरों की भलाई के समान कोई धर्म नहीं और दूसरो को दुख पहुंचाने के समान कोई पाप नहीं।

सनातन संस्कृति और मर्यादा का प्रतीक हैं भगवान श्री राम। भगवान श्री राम आजीवन स्वयं को कष्ट देकर भी दूसरों को सुख पहुंचाने के कार्य करते रहे, बाल्यकाल से ही उन्होंने सदाचार, विनम्रता और धर्म के नियमों का पालन किया। उनकी धर्म निष्ठा का सबसे बड़ा प्रमाण तब मिला जब पिता दशरथ ने कैकेयी के वचन से बाध्य होकर उन्हें 14 वर्ष के वनवास का आदेश दिया। यद्यपि वे राजा बनने के अधिकारी थे, फिर भी उन्होंने बिना किसी विरोध के पिता के वचन को धर्म मानकर स्वीकार किया और पिता की आज्ञापालन का परिणाम ही था कि राम एक राजकुमार से दिव्य देवीय सत्ता के प्रतिनिधि बनकर भगवत्ता को प्राप्त हुए। वनवास के दौरान भी वे धर्म से कभी विचलित नहीं हुए, उन्होंने हर परिस्थिति में न्याय और मर्यादा का पालन किया। जब रावण ने सीता माता का हरण किया तब प्रभु श्री राम ने युद्ध का निर्णय लिया लेकिन उन्होंने युद्ध में भी धर्म के नियमों का पालन किया। उन्होंने घोर अन्याय पर उतारु रावण जैसे शत्रु का भी सम्मान किया और युद्ध की समाप्ति के बाद रावण के प्रति दया और करुणा दिखाई। राम का जीवन यह सिखाता है कि धर्म केवल पूजा, अनुष्ठान का नाम नहीं, अपितु सत्य, न्याय, करुणा और कर्त्तव्य पालन का मार्ग है। राम की धर्म निष्ठा ही उन्हें जन-जन के मन और हृदय के नायक मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान बना देती है।

भगवान श्री राम की तरह ही हमारे गुरुदेव महाराज धर्मनिष्ठ मर्यादा पालक हैं। पूज्य महाराजश्री के वंश की परम्परा रही है कि घर की बड़ी संतान धर्म के लिए समर्पित हो, गुरुवर अपने पिता जी के ज्येष्ठ सुपुत्र हैं, जब गुरुवर के पिता जी ने उन्हें धर्म की रक्षा के लिए अर्पित करते हुए गुरुकुल में पढ़ने के लिए भेजा और उन्होंने कहा कि अब पीछे मुड़कर नहीं देखना तो गुरु जी ने अपने पिता जी के वाक्य को आगे बढ़ने का मूलमंत्र मानकर शिक्षाकाल से ही धर्म के लिए समर्पित होकर वेद-शास्त्रों के गूढ़ अध्ययन के उपरांत उनकी शिक्षाओं को अपने प्रेरक प्रवचनों से धर्म का प्रचार-प्रसार करने लगे और आगे चलकर 'विश्व जागृति मिशन' जैसी धार्मिक सेवाभावी संस्था का गठन किया। गुरुवर की धर्म निष्ठा का ही प्रमाण है कि प्रयाग कुंभ के 'संत सम्मेलन' में आपने धर्म और सनातन संस्कृति की रक्षा के लिए भारत के हर एक संत के आश्रम के साथ एक गुरुकुल और देश के हर मंदिर के साथ एक संस्कार केन्द्र खोलने की बात कही और स्वयं अगले महाकुंभ तक 10 गुरुकुल और 108 संस्कार केन्द्र खोलने का संकल्प लिया और आज मिशन गुरुवर के संकल्प को साकार करने में निरंतर अग्रसर है।

प्रयास करें प्रतिदिन गुरु से जुड़े रहें। चाहे टी.वी., सोशल मीडिया, सत्संगों या ध्यान शिविरों के माध्यम से। आपके जीवन में भी गुरु से जुड़ने के पश्चात् निश्चित ही कुछ अप्रत्याशित, आश्चर्यजनक बदलाव आए होंगे, आपत्ति-विपत्ति से बाहर निकले होंगे, तो आप अवश्य हमसे अपने अनुभव साझा कीजिए ताकि आपसे प्रेरित होकर अन्य भक्तों की भी गुरु के प्रति श्रद्धा बढ़े और उन्हें भी आप के जैसा ही गुरु कृपा का लाभ प्राप्त हो सके। आप अपने अनुभव फोटो सहित श्री शिवाकांत द्विवेदी जी (9968613351) सहसम्पादक धर्मदूत को अवश्य भेजें।

क्रमशः ...

आपका अपना
देवराज कटारीया

फरीदाबाद में दो दिवसीय सत्संग-ध्यान सम्पन्न

स्वयं पर भरोसा रखें, होगी भगवान और गुरु की कृपा - सुधांशु जी महाराज

फरीदाबाद। पूज्य गुरुदेव श्री सुधांशु जी महाराज एवं ध्यान गुरु डॉ. अर्चिका दीदी के सान्निध्य में 26 से 27 अक्टूबर, 2025 तक ध्यान साधना एवं सत्संग कार्यक्रम का आयोजन कर्मवीर गार्डन, सेक्टर-11, फरीदाबाद में किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्जवलन से हुआ जिसमें पूज्य महाराजश्री के साथ महंत मणिराम दास जी महाराज, श्रीमती प्रवीण बत्रा जोशी मेयर, सीमा त्रिखा पूर्व विधायक और श्री रमेश कुमार गुप्ता वि.हि.प. हरियाणा के कोषाध्यक्ष सम्मिलत रहे। इस अवसर पर भक्तों को आशीर्वाद देते हुए पूज्य महाराजश्री ने कहा कि जो व्यक्ति अनुशासन में रहता है, वही सफलता के पथ पर चल पाता है। महाराज श्री ने कहा कि जिनके जीवन में नियम है, अनुशासन है। वह व्यक्ति शांत रहता है। अनुशासित व्यक्ति के पास ही शक्ति होती है।

यह भी जान लें कि शांत व्यक्ति ही दूसरों में शांति बांट सकता है। मधुर वाणी खुद को भी शांति देती है और दूसरे को भी शांति देती है। मुस्कुराहट चेहरे पर हो तो मन में शांति रहेगी। क्रोध से अशांति आती है। यह बात जान लें कि जब तक शांति मन में नहीं होगी, भक्ति भी नहीं होगी।

भगवान के शरण में सम्पूर्ण भाव प्रकट करते हुए जाने को कहा तथा उनसे शांति की दौलत मांगी। उन्होंने मानसिक रूप से अपनी आंतरिक विचारों में चल रहे भावों को सुनकर भगवान के द्वार तक जाएं और उसकी पवित्र कृपा से स्वयं को पवित्र बनाएं। पूज्य महाराजत्री जी आगे यह भी कहा कि जो व्यक्ति खुद के ऊपर भरोसा करता है उसी के ऊपर भगवान और गुरु की कृपा प्राप्त होती है तथा समाज में प्रसिद्धि मिलती है। इस कार्यक्रम में ध्यान गुरु डॉ. अर्चिका दीदी द्वारा ध्यान साधना सत्र में साधकों को ध्यान की विशेष विधियां सिखाई गई। बड़खल (फरीदाबाद) विधानसभा के विधायक श्री धनेश अदलखा ने सत्संग में आकर आशीर्वाद प्राप्त करते हुए सत्संग श्रवण किया। कार्यक्रम का समापन नागरिक अभिनन्दन एवं आरती के साथ हुआ। मण्डल प्रधान श्री राजकुमार अरोड़ा एवं मंडल के सभी पदाधिकारियों, सेवादारों और कार्यकर्ताओं का कार्यक्रम को सफल बनाने में सराहनीय योगदान रहा। ●

आजीवन गुरुसेवा में समर्पित रहे श्रीकृष्ण केदार तांतिया जी को विश्व जागृति मिशन ने दी भावभीनी श्रद्धांजलि

स्वर्गीय श्री कृष्ण केदार तांतिया जी सद्गुरु पूज्यश्री सुधांशु जी महाराज के सान्निध्य में आने से लेकर जीवन पर्यन्त विश्व जागृति मिशन एवं अपनी गुरुसत्ता के प्रति समर्पित जीवन जीते रहे। उन्होंने आजीवन मानव सेवा-धर्मसेवा को ईश्वर की पूजा मानकर जीवन जिया और आजीवन मिशन के सेवाकार्यों से जुड़े रहे। आप भारत के अनेक धर्म स्थलों के धार्मिक एवं सामाजिक सेवाकार्यों में योगदान देते रहे। इसके अतिरिक्त विश्व जागृति मिशन के बेंगलुरु, राजनकुंटे स्थित श्री धाम आश्रम के विशेष सहयोगी और समर्पित श्रीमंत भक्त की भूमिका निभाने एवं अन्य अनेक सेवाकार्यों में सराहनीय योगदान रहा। ख्याति प्राप्त वरिष्ठजनों के सम्मान में आयोजित श्रद्धापर्व-2024 के पावन अवसर पर आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली में श्री कृष्ण केदार तांतिया

जी को महान समाजसेवी, मानवता प्रेमी, दीन-दुःखियों के हितैषी के रूप में सत्कीर्ति सम्मान से सम्मानित भी किया गया। पूज्य सद्गुरु श्री सुधांशु जी महाराज के चरणों में अपार निष्ठा रखने वाले सेवाभावी शिष्य श्री टांटिया जी जीवन के अंतिम क्षण 97 वर्ष की उम्र तक सेवाधर्मी उत्साह और जुनून से भरे रहे। 27 सितम्बर को वे गोलोकवासी हो गये। अब वे इस दुनिया में नहीं हैं, पर उनकी गुरुनिष्ठा सत्कीर्ति बनकर अनन्तकाल तक प्रेरणा देती रहेगी। यह सम्पूर्ण मिशन परिवार उनके प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है। उनका सम्पूर्ण परिवार उनके सभी धर्म-पुण्य कार्यों में जीवन भर सहभागी रहा, अब उनके सुपुत्र गण अपने पिता श्री के सेवा मार्ग का अनुशरण करते हुए सेवा कार्यों में समर्पित हैं। ●

लहसुनः रसोई की सबसे प्रभावशाली दवा

क्या आप जानते हैं कि आपकी रसोई में मौजूद एक छोटी सी लहसुन की कली आयुर्वेद के अनुसार एक असाधारण 'रसायन' है? इसे 'रसोन' कहते हैं। यानी 5 रसों (स्वादों) का संगम यह सिर्फ स्वाद नहीं, यह है स्वास्थ्य का पूरा पैकेज।

लहसुन क्यों है इतनी खास?

वात और कफ का दुश्मन

* लहसुन की तासीर गर्म होती है।
* यह जोड़ों के दर्द और सर्दी-खांसी जैसे कफ रोगों में रामबाण है।
* ठंड के मौसम में इसका सेवन जरूर करें।

पाचन की अग्नि को करे तेज

* यह आपकी जठराग्नि को बढ़ाती है, जिससे भोजन अच्छे से पचता है।
* यह शरीर में जमा हुए 'वसा' को काटकर बाहर निकालता है।
* सरल शब्दों में यह आपका नैचुरल डेटोक्सीफायर है।

दिल का दोस्त और रोग प्रतिरोधक

* यह रक्त संचार को बेहत्तर बनाता है और ब्लड प्रेशर को नियंत्रित करने में सहायक है।
* इसे प्रकृति का नैचुरल एंटीबायटीक माना जाता है। यह आपकी इम्युनिटी को बूस्ट करता है और संक्रमण से बचाता है।

वैद्य की सलाहः ऐसे करें सही प्रयोग

* लहसुन शक्तिशाली है, इसलिए इसे दवा की तरह उपयोग करें, भोजन की तरह नहीं।
* घी या शहद के साथ सुबह खाली पेट 1-2 कली को देसी घी में हल्का भूनकर या शहद के साथ लें। इससे इसकी उष्णता संतुलित रहती है।
* **विवेक से लेंः** यदि आपको बहुत ज्यादा एसिडिटी की समस्या है, तो इसकी मात्रा कम रखें।

-डॉ. संजय थम्मन
आयुर्वेदिक हीलर
युगऋषि आयुर्वेद उपचार केन्द्र

स्वस्थ तन और मन के लिए करें प्राणायाम

प्राणायाम योग का अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है, जो श्वास-प्रश्वास के माध्यम से शरीर, मन और आत्मा को संतुलित करता है। स्वस्थ, संतुलित और सुखी जीवन के लिए प्रतिदिन प्राणायाम करना अत्यंत आवश्यक है। प्राणायाम के लाभ-

शारीरिक लाभ-प्राणायाम से शरीर में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ती है, जिससे रक्त शुद्ध होता है। फेफड़े मजबूत बनते हैं और श्वसन तंत्र की कार्यक्षमता बढ़ती है। नियमित अभ्यास से हृदय स्वस्थ रहता है और रक्तचाप नियंत्रित रहता है। शरीर की कोशिकाएँ सक्रिय और ऊर्जावान रहती हैं। रोग-प्रतिरोधक क्षमता मजबूत होती है, जिससे बीमारियाँ दूर रहती हैं।

मानसिक लाभ-प्राणायाम करने से मन शांत और एकाग्र होता है। तनाव, चिंता, क्रोध और अवसाद जैसी मानसिक समस्याएँ कम होती हैं। सकारात्मक सोच और आत्मविश्वास का विकास होता है। स्मरण शक्ति और ध्यान केंद्रित करने की क्षमता बढ़ती है।

आध्यात्मिक लाभ-प्राणायाम से व्यक्ति आत्म-साक्षात्कार की ओर बढ़ता है। श्वास पर नियंत्रण पाने से विचारों पर भी नियंत्रण आता है। यह मनुष्य को आंतरिक शांति और संतुलन प्रदान करता है। योग और ध्यान की सफलता के लिए प्राणायाम आवश्यक आधार है।

प्रमुख प्राणायाम के प्रकार-

अनुलोम-विलोमः श्वास लेने और छोड़ने की प्रक्रिया से मानसिक शांति मिलती है।

कपालभातिः शरीर से विषैले तत्वों को बाहर निकालता है।

भ्रामरीः तनाव कम करता है और मन को शांत करता है। शरीर को ऊर्जावान बनाता है और रक्त शुद्ध करता है।

स्वास्थ्य पर समग्र प्रभाव-पाचन तंत्र को संतुलित रखता है। नींद अच्छी आती है और शरीर में स्फूर्ति बनी रहती है। शरीर, मन और आत्मा तीनों का सामंजस्य स्थापित करता है ●

'धर्मो रक्षति रक्षितः' धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए धर्मादा से जुड़ें

धर्म शास्त्रों का संदेश है कि व्यक्ति जो भी कमाये उसमें से कुछ अंश धर्म के लिए दान कर अपने धन की शुद्धि करे। क्योंकि कहा गया है-'धर्मो रक्षति रक्षितः' जो धर्म की रक्षा करता है धर्म उसकी रक्षा करता है। प्राचीन समय में हर व्यक्ति अपनी कमाई में से दसवां भाग ऐसे कार्यों में दान पुण्य करता था। इससे व्यक्ति की आय चाहे भले ही कम रही हो, लेकिन उसकी कमाई में बरकत बनी रहती थी। समय बदला और लोगों की आय भी बढ़ी लेकिन वे धीरे-धीरे दान-पुण्य करना भूलने लगे जिससे उनकी आय में बढ़ोत्तरी होने के बाद भी बरकत में कमी होने लगी। लोगों की आय भी बढ़े और बरकत भी बनी रहे इस उद्देश्य से पूज्य गुरुदेव जी महाराज ने विश्व जागृति मिशन द्वारा भक्तों के कल्याण के लिए धर्मादा सेवाएं प्रारम्भ करवाई हैं। मिशन अनाथाश्रम, गुरुकुल, योगा स्कूल, वृद्धाश्रम, धर्मार्थ अस्पताल, गौशालाएं, भण्डारे, आश्रम एवं मंदिर निर्माण, यज्ञ, सत्संग एवं साधना शिविर तथा दैवीय आपदाओं में सेवा-सहयोग भी करता है। आप इन सेवाकार्यों में दान-पुण्य कर अपने घर-परिवार में सुख-शांति और नौकरी-व्यापार में उन्नति-प्रगति का वरदान पायें।

**इस जीवन का पैसा अगले जन्म में काम नहीं आता,
मगर इस जीवन का पुण्य जन्मों, जन्मों तक काम आता है।**

संस्कृति का संवाहक गुरुकुल

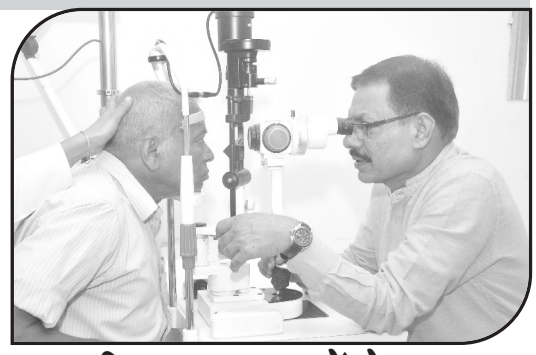

करुणासिन्धु अस्पताल में नेत्र उपचार

बालाश्रम (अनाथाश्रम)

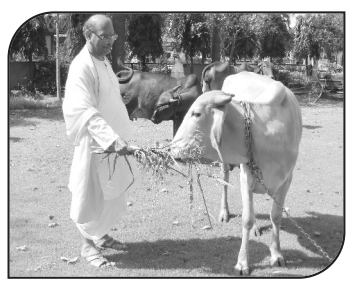

गौशाला में गौग्रास

आनन्दधाम का वृद्धाश्रम

यज्ञ-अग्निहोत्र

दैवीय आपदा सहयोग

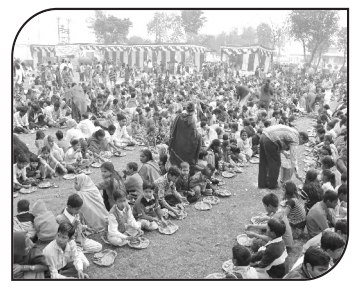

आनन्दधाम में भण्डारा

यदि आप अभी तक धर्मादा सदस्य नहीं बने हैं और विश्व जागृति मिशन द्वारा चलाये जा रहे सेवा प्रकल्पों से संतुष्ट हैं तो श्री जी.सी. जोशी, दूरभाष-09311534556 पर सम्पर्क करें।

एक सुविधा यह भी

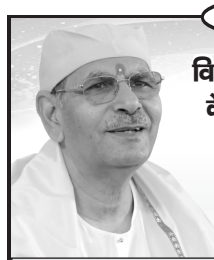

विश्व जागृति मिशन द्वारा संचालित विभिन्न सेवाप्रकल्पों के लिए दान आप पे.टी.एम. एवं अन्य यू.पी.आई. ऐप द्वारा भी कर सकते हैं।

paytm UPI UNIFIED PAYMENTS INTERFACE
Accepted Here

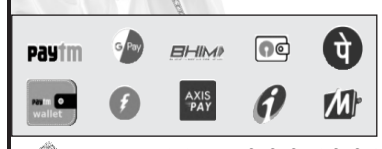

भुगतान करने के पश्चात श्री जी.सी. जोशी जी के वाट्सऐप नं॰ 93115 34556 पर अवश्य सूचित करें।
आपके द्वारा दिया गया सहयोग आयकर की धारा 80G के अन्तर्गत करमुक्त है।

भुगतान करने के लिए पे.टी.एम. या किसी भी अन्य यू.पी.आई. भुगतान ऐप में QRcode को स्कैन करें

परमात्मा के प्यारों की पहचान

परमात्मा से यदि आप यह कहो कि मैंने बड़े पुण्य किये हैं, बड़े अच्छे कर्म किये हैं, तो हिसाब-किताब की बात हो जाएगी, लेकिन यदि आप यह कहो कि मेरे प्रभु मेरे कर्मों का क्या लेखा-जोखा मैं तो तुझसे तेरी कृपा मांगता हूं। बस तुम प्रसन्न होकर, मेरे हो जाओ। मुझे और कुछ नहीं चाहिये। परमात्मा अगर रीझ जायें तो न जाने क्या दे दें? सब कुछ मिल जाय। भगवान से उसकी दया मांगना। यह नहीं कहना कि न जाने कितने-कितने पुण्य मैंने किये, भगवान मैंने क्या बिगाड़ा कि मुझे दु:ख मिल रहे हैं, कुछ न कुछ गलत किया ही होगा जो दु:ख मिल रहा है। उससे तो यही कहो कि हे दीन दयालु, हे कृपालुदेव, हे करुणा सागर अपनी दया करो, अपनी दया का कृपाभरा हाथ मेरे सिर पर रखो।

भगवान के चरणों में बैठकर एकान्त स्थान में किसी पवित्र बेला में दुनिया से ध्यान हटाकर, तब निवेदन करना। हे मेरे प्रभु! जो लगन तुमने मीरा को दी, वह लगन मुझे भी दे। ऐसा क्या था सूरदास की खड़ताल में कि तू रीझकर आ गया। तुलसी ने कौन से बोल कह दिये प्रभु, तू उसका हो गया। इन ऋषियों ने ऐसा क्या दे दिया कि तू उनके हृदय में बस गया। हे प्रभु! जितना तू सबका है उतना ही मेरा भी है। वर्षा होती है, बादल तो सबमें एक सी ही वर्षा बरसाता है, मेरे हृदय में भी अपनी करुणा की वर्षा करो। लगन पैदा कर दो, जिससे तुझे मना सकूं। तेरा हो जाऊं और तुझे अपना बना लूं। मेरे परमात्मा संसार की दौलत भले ही कम दे देना पर श्रद्धा की दौलत कभी कम न देना। अपने प्रेम की दौलत को कभी कम मत देना। भगवान कहते हैं जो संसार के पदार्थों के स्वामित्व की भावना हटाकर कह रहा है कि यह मेरा नहीं है, सब कुछ मेरे प्रभु का है। जो ऐसी अनुभूति और ऐसा अहसास अपने हृदय में करता है, जो अहंकार से रहित है, दु:ख और सुख में जो समान रहता है। जो क्षमावान है। संतुष्ट, सतत योगी और दृढ़ निश्चयी है। जो सतत् संतुष्ट रहता है, अपने आपको मुझसे जोड़े रखता है। जिसका निश्चय दृढ़ है, जिसने मन और बुद्धि को मेरे प्रति अर्पित कर दिया है, ऐसे शुभ लक्षणों से युक्त जो भी कोई है वह मेरा प्रिय है, यही मेरे प्यारों की पहचान है।'

मनुष्य के जीवन में महत्वपूर्ण चीज है ईश्वर के प्रति विश्वास। विश्वास से श्रद्धा, श्रद्धा से संकल्प की प्राप्ति। दृढ़ संकल्प साधना का आधार है और साधना में जब व्यक्ति दृढ़ संकल्पी होने लगता है, अनेक विघ्न-बाधाओं के बीच जिसका संकल्प नहीं टूटता, वही प्रभु की कृपा पाने में सफल होता है। इसलिए कुछ भी हो प्रभु के प्रति अपने विश्वास में कभी कमी नहीं आने देना। ●

वेलिंग बोरो, इंग्लैंड के महापौर पधारे आनन्दधाम आश्रम

आनन्दधाम, नई दिल्ली, 13 अक्टूबर, 2025, वेलिंग बोरो, इंग्लैंड के महापौर श्री राज मिश्र जी नई दिल्ली स्थित विश्व जागृति मिशन मुख्यालय आनंदधाम तीर्थ पधारे। उन्होंने पूज्य श्री सुधांशु जी महाराज से आशीर्वाद लिया और सनातन संस्कृति के मूल्यों को नई पीढ़ी में स्थापित करने हेतु पूज्यवर से मार्गदर्शन प्राप्त किया। श्री मिश्र जी ने संस्था के स्वयंसेवकों के साथ आश्रम परिसर में संचालित गुरु संकल्पित विविध प्रकल्पों का अवलोकन कर स्वयं को गौरवांवित अनुभव किया।

आनंदधाम आश्रम में श्रद्धा-आस्था से मनाया गया छठ पर्व

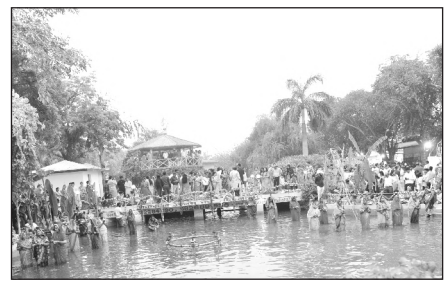

पूज्य गुरुदेव श्री सुधांशु जी महाराज के आशीर्वाद से आनंदधाम आश्रम के मानसरोवर झील में सूर्य उपासना का पर्व 'छठ' बड़ी श्रद्धा और आस्था के साथ मनाया गया। मानसरोवर झील के जल में छठ पर्व पर खड़े होकर 27 अक्टूबर की सायं अस्त होते सूर्य को व्रतियों द्वारा अर्घ्य देते देखना और 28 अक्टूबर की प्रात: उगते हुए बाल सूर्य को अर्घ्य देते हुए व्रतियों का दृश्य अद्भुत था। ज्ञात हो कि चार दिनों तक चलने वाले इस व्रत में व्रती अन्न-जल का त्यागकर पूरी शुद्धता, सादगी व आत्मसंयम के साथ पूजा करता है। इस व्रत से व्यक्ति के जीवन में सुख, समृद्धि, आरोग्य और संतान सुख की प्राप्ति होती है। यह पर्व प्रकृति के प्रति आभार और सूर्य की जीवनदायिनी शक्ति को सम्मान देने का प्रतीक है। ●

संस्कृत गायन प्रतियोगिता में गुरुकुल को प्रदेश स्तर पर मिला प्रथम स्थान

परमपूज्य श्री सद्गुरु देव महाराज जी एवं परमपूज्या ध्यान एवं योग गुरु डॉ.अर्चिका दीदी जी की कृपा-आशीर्वाद से गोस्वामी गिरधारी लाल प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, दिल्ली सरकार द्वारा आयोजित दिल्ली प्रदेश स्तरीय संस्कृत गायन प्रतियोगिता में महर्षि वेद व्यास गुरुकुल विद्यापीठ के ऋषि कुमारों ने सम्पूर्ण दिल्ली प्रदेश में "प्रथम स्थान" प्राप्त किया है। गुरुकुल के विद्यार्थियों की इस महान उपलब्धि से जहां गोस्वामी गिरधारी लाल प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के सभी पदाधिकारियों ने पूज्य महाराजश्री द्वारा विद्यार्थियों को दिये जा रहे संस्कार और गुरुकुल के आचार्यों द्वारा दी जा रही शिक्षा-विद्या की भूरि-भूरि प्रसंशा की, वहीं सम्पूर्ण विश्व जागृति मिशन परिवार गुरुकुल के विद्यार्थियों की इस उपलब्धि पर गौरवान्वित है। ●

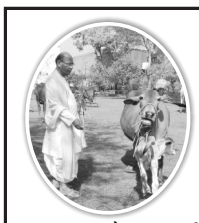

कामधेनु गौशाला

गौ माता के संरक्षण और संवर्द्धन हेतु दान देकर पुण्य के भागीदार बनें।

कृपया गौशाला में दान देने के लिए आप अपनी सहयोग राशि ''विश्व जागृति मिशन-गौशाला'' के एक्सिस बैंक लिमिटेड, A-11, विशाल एनक्लेव, राजौरी गार्डन गार्डन, नई दिल्ली - 110027 के खाता संख्या -910010001264246, IFSC Code - UTIB0000066 में सीधे जमा करवा सकते हैं, इसकी सूचना आप श्री सतीश शर्मा-मो०-9310278078 पर अवश्य भेजें ताकि जमा राशि की रसीद बनाकर आपको प्रेषित कर सकें।

Paytm UPI UNIFIED PAYMENTS INTERFACE
Accepted Here
भुगतान करने के लिए पे.टी.एम. या किसी भी अन्य यू.पी.आई. भुगतान ऐप में QRcode को स्कैन करें

आपके द्वारा दिया गया दान आयकर की धारा 80-G के अंतर्गत कर मुक्त है।

कार्यालय : आनन्दधाम आश्रम, नांगलोई-नजफगढ़ रोड, बक्करवाला मार्ग, नई दिल्ली-110041
दूरभाष : 9560792792, 9582954200
ई-मेल : annapurna@vishwajagritimission.org
वेबसाइट : www.vishwajagritimission.org

अपने स्वयं व अपनों के जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ व पूर्वजों की पुण्यस्मृति में अन्नपूर्णा योजना के अन्तर्गत यजमानों द्वारा आनन्दधाम आश्रम के गुरुकुल, वृद्धाश्रम में भोजन करवाया जाता है तथा गऊओं के लिए गौग्रास भी दिया जाता है। इस अवसर पर यजमानों के लिए मंगलकामना करते हुए आचार्यों एवं ऋषिकुमारों द्वारा प्रार्थना और यज्ञ भी किया जाता है।

इस योजना की सहयोग राशि आप सीधे बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं-

"VISHWA JAGRITI MISSION" का
A/c No. 916010029741912 Axis Bank,
East Punjabi Bagh, New Delhi-110026,
IFS CODE - UTIB0002497.

भुगतान करने के लिए पेटीएम या किसी भी अन्य यू.पी.आई. भुगतान ऐप में QRcode को स्कैन करें
www.vishwajagritimission.org
आनंदधाम आश्रम, नांगलोई-नजफगढ़ रोड, बक्करवाला मार्ग, नई दिल्ली-110041

राशि जमा कराने के उपरान्त उसकी सूचना हमें ई-मेल : annapurna@vishwajagritimission.org याव्हाट्सऐप नम्बर : 9582954200, 9560792792 पर अवश्य भेजें,ताकि जमा की गई राशि की रसीद आपको भेजी जा सके।

एक से अधिक तिथियाँ आरक्षित कराने के लिए उपरोक्त ई-मेल आई.डी. पर सूचित करें।
(आपके द्वारा दिया गया दान आयकर की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है)

पंचकुला हरियाणा में सम्पन्न हुआ मिशन का सनातन संस्कृति जागरण अभियान श्रृंखला का द्वितीय सत्संग

सनातन पहले भी था, आज भी है और आगे भी रहेगा -सुधांशु जी महाराज

विश्व विख्यात संत-महंत और राजनेताओं ने गुरुवर के साथ भरी सनातन संस्कृति जागरण अभियान की हूंकार

पंचकूला। पूज्य सद्गुरु श्री सुधांशु जी महाराज एवं ध्यान गुरु डॉ. अर्चिका दीदी के पावन सान्निध्य में विश्व जागृति मिशन द्वारा 30 अक्टूबर से 2 नवंबर, 2025 तक आयोजित सनातन संस्कृति जागरण अभियान पंचकुला के शालीमार ग्राउंड में अत्यंत भव्यता और आध्यात्मिक ऊर्जा से भरपूर रहा। इस चार दिवसीय आयोजन के अंतर्गत मिशन के 5वें गुरुकुल परियोजना का लोकार्पण किया गया, जो पटियाला, पंजाब में प्रस्तावित है। यह गुरुकुल भारत में संस्कार, शिक्षा और सेवा के त्रिवेणी संगम के रूप में विकसित होगा। इससे पूर्व विश्व जागृति मिशन द्वारा दिल्ली, कानपुर, नागपुर में तीन गुरुकुल स्थापित किये जा चुके हैं, जबकि चौथे गुरुकुल का कोलकाता में अनावरण हो चुका है। अब पंजाब में प्रस्तावित यह पांचवा गुरुकुल मॉडल शिक्षा-संस्कार यात्रा का नया अध्याय लिखेगा और महाराजश्री द्वारा प्रयाग महाकुंभ में लिए गए 10 गुरुकुलों की स्थापना के संकल्प के लिए मील का पत्थर साबित होगा। कार्यक्रम के दौरान मिशन द्वारा संचालित संस्कार केंद्रों की प्रगति पर भी प्रकाश डाला गया। महाराजश्री के आशीर्वाद से विश्व जागृति मिशन का संकल्प देशभर में 108 संस्कार केंद्रों की स्थापना का है जिनमें से 35 केंद्र सक्रिय हो चुके हैं और शेष केंद्रों की स्थापना का कार्य तीव्रता से जारी है। इन केंद्रों के माध्यम से बच्चों को संस्कार कक्षाओं का लाभ दिया जा रहा है जहां अनुशासन, कृतज्ञता, संस्कार और राष्ट्रभाव का बीजारोपण किया जा रहा है।

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति ने आयोजन की शोभा को और भी दिव्य बना दिया। इस अवसर पर केन्द्रीय मंत्र माननीय श्री मनोहर लाल खट्टर जी, हरियाणा के मुख्यमंत्री माननीय नायब सिंह सैनी, गीता मनीषी ज्ञानानंद जी, संत मणिराम दास जी, आचार्य बालकृष्ण जी, दिगंबर अखाड़ा के महामंडलेश्वर स्वामी रामानंदाचार्य जी महाराज, स्वामी राज राजेश्वरानन्द जी महाराज, आयुर्वेद आचार्य मनीष जी, हरियाणा के राज्यपाल माननीय असीम कुमार घोष जी, पंजाब के राज्यपाल माननीय गुलाब सिंह कटारिया जी, हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल माननीय शिव प्रताप शुक्ला जी, हरियाणा विधानसभा के अध्यक्ष माननीय हरविंदर

श्री गुलाब सिंह कटारिया जी-राज्यपाल, पंजाब

श्री नायब सिंह सैनी जी-मुख्यमंत्री, हरियाणा

श्री मनोहर लाल खट्टर जी-केन्द्रीय मंत्री, भारत

महारानी परनीत कौर जी, पूर्व विदेश राज्यमंत्री

कल्याण जी, पूर्व विदेश राज्यमंत्री महारानी परनीत कौर जी, एन.डी.ए. और शिवसेना (शिंदे) के समन्वयक डॉ. अभिषेक वर्मा जी, हिमाचल प्रदेश भाजपा के प्रभारी श्री संजय टंडन जी, बिरला ग्रुप हॉस्पीटल के निदेशक एवं सीनियर सर्जन डॉ. संजय माहेश्वरी जी ने अपनी उपस्थिति दर्ज की। सभी अतिथियों ने विश्व जागृति मिशन के इस अभियान को भारत के नैतिक और सांस्कृतिक पुनरुद्धार की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल और राष्ट्रीय चरित्र निर्माण का प्रेरक माध्यम बताया।

कार्यक्रम में भक्तों को संबोधित करते हुए पूज्य सद्गुरु श्री सुधांशु जी महाराज ने कहा कि सनातन धर्म दया, करुणा और परोपकार पर आधारित है हमें सनातन की शक्ति को पहचानना है तथा सनातन धर्म को विश्व शक्ति बनाना है। हर मानव का धर्म है कि वह अपने जीवन को कीमती बनाये। यदि हम गौ, गंगा, गायत्री, गुरु और गीता से जुड़ जायें तो हमारे जीवन का रूपांतरण हो जायेगा। जीवन को रूपांतरित करने के लिए आप अपने जीवन को मूल्यवान सिद्धांतों से जोड़ें, आत्मा को परमचेतना से जोड़ें और हर दिन भक्ति में बैठकर अपने भीतर की रोशनी को जगायें। हरियाणा के कुरुक्षेत्र की धरती से भगवान कृष्ण ने गीता का जो संदेश पूरे विश्व में दिया वही सनातन धर्म का मूल है सनातन धर्म से ही राष्ट्र का उत्थान संभव है। सनातन पहले भी था, आज भी है और आगे भी रहेगा।

इस अवसर पर कार्यक्रम में आये हुए सनातन प्रेमियों को संबोधित करते हुए ध्यान गुरु डॉ. अर्चिका दीदी ने कहा- सनातन संस्कृति आध्यात्मिक उत्थान और

ज्ञान-ध्यान की संस्कृति है। सनातन संस्कृति के जागरण के लिए हम सभी को एक जुट होकर कार्य करना होगा। मन में दृढ़ निश्चय और हृदय में शुभ संकल्पों को लेकर अपनी संस्कृति और संस्कारों की रक्षा के लिए कार्य करना होगा। पूज्य गुरुवर के आशीर्वाद से हम पूरे देश में 108 संस्कार केन्द्रों के संचालन के लिए प्रतिबद्ध हैं। अब तक देश के विभिन्न प्रांतों में हमारे 35 संस्कार केन्द्र संचालित हो चुके हैं। जहां बच्चों को संस्कार कक्षाओं में संस्कृति, संस्कार, मर्यादा, नैतिकता और राष्ट्र प्रेम की शिक्षा दी जाती है। हम चाहते हैं कि हमारे देश का बच्चा बच्चा सुसंस्कारी हो और उसे अपने धर्म, संस्कृति और देश से प्रेम हो।

पूज्य सुधांशु जी महाराज के प्रेरणादायक प्रवचनों ने लोगों को जीवन में संयम, सेवा और साधना के महत्व को अपनाने का संदेश दिया। वहीं मिशन की उपाध्यक्ष डॉ अर्चिका दीदी ने युवाओं को चरित्र, कृतज्ञता तथा सृजनशीलता से संपन्न जीवन जीने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम को सफल बनाने में मिशन के महामंत्री श्री देवराज कटारीया जी के नेतृत्व में केन्द्रीय अधिकारियों, हरियाणा, पंजाब व हिमाचल प्रदेश के सभी मंडलों के प्रधान अधिकारियों, सेवादारों व कार्यकर्ताओं की सराहनीय भूमिका रही। ●

सनातन जागृति अभियान कार्यक्रम में पधारे महंत श्री मणिराम दास जी महाराज (मौनी बाबा)

इस कार्यक्रम में महंत श्री मणिराम दास जी महाराज (मौनी बाबा) पधारे। ज्ञात हो कि मौनी बाबा एक महान संत हैं, जिन्होंने केदारनाथ की गुफा में रहकर कई वर्षों तक अनवरत जप-तप-साधना की। साधना के उपरान्त उनके अन्तर्हृदय में यह प्रेरणा हुई कि मुझे सनातन धर्म के उत्थान के लिए सनातन धर्मावलम्बियों को आर्थिक रूप से मजबूत बनाना होगा और इस विचार को लेकर उन्होंने वर्ष 2015 में स्वास्तिक के नाम से अपना

कार्य प्रारंभ किया और 2023 में सर्वाचार्य स्मार्ट इंडस्ट्री प्राइवेट लिमिटेड की स्थापना की, जिसके तहत सनातन ब्रांड का निर्माण किया जाता है। सनातन ब्रांड के माध्यम से मौनी बाबा सनातनी परिवारों को आर्थिक रूप से सशक्त बना रहे हैं और उन्हें रोजगार भी दे रहे हैं। ●

विश्व जागृति मिशन (रजि०) के लिए श्री देवराज कटारीया द्वारा समाचार पत्र "धर्मदूत" ओंकारेश्वर महादेव मंदिर, 'जी' ब्लॉक, मानसरोवर गार्डन, नई दिल्ली-110015 से प्रकाशित एवं पुष्पक प्रिन्टर्स द्वारा मुद्रित। ग्रॉफिक डिजाइनिंग : सीता फाईन आर्ट्स प्रा० लि०, नई दिल्ली। सम्पादक : डॉ. नरेन्द्र मदान